Seventeenth Loksabha

>

Title: Regarding reported Chinese incursion into the territory of India.

श्री अधीर रंजन चौधरी (बहरामपुर): सर, हमारे रक्षा मंत्री जी भी यहां बैठे हैं । मुझे थोड़ा बोलने दीजिए ।

सर, मैं एक गम्भीर मुद्दा आज सदन के सामने रखना चाहता हूं । India is destined to be surrounded by two hostile neighbours, especially Pakistan and China; and they are always posing inimical attitude towards our country. We can change the history but cannot change the geography. We are simply wedged between the two nuclear power nations. इस सदन में सब देखते हैं कि हम बार-बार पाकिस्तान के खिलाफ आवाज़ उठाते हैं क्योंकि पाकिस्तान हमारे साथ दुश्मनी करता है, पाकिस्तान आतंकवादियों को पनाह देता है । उसके खिलाफ हम केवल आवाज़ ही नहीं उठाते, बल्कि हमारी फौज लड़ाई लड़ती हैं और कामयाबी हासिल करती हैं । लेकिन, इसके साथ-साथ एक और बात हमें ध्यान में रखनी चाहिए कि पाकिस्तान का मददगार कौन है? आतंकवाद को पाकिस्तान पनाह देता है और पाकिस्तान को पनाह देता है चीन, लेकिन चीन के खिलाफ हमारा रुख संतुलित होता है जबकि पाकिस्तान के खिलाफ हमारा रुख आक्रामक होता है, हमें इसे देखना चाहिए । चीन अंडमान-निकोबार तक जहाज भेजने लगा है और हमारी नेवी उनके पीछे धावा बोलती है ।

सर, इस सदन में 19 तारीख को अरुणाचल प्रदेश के एम.पी. तापिर गाव ने एक बड़ा गम्भीर मुद्दा उठाया, जिसे हम सबको देखना चाहिए । उन्होंने इस सदन के अन्दर कहा कि 'ऑनरेबल स्पीकर सर, मैं हिन्दुस्तान की मीडिया हाउस को यह भी कहना चाहूंगा कि किसी भी इश्यू पर मीडिया का फोकस नहीं होता । चाइना द्वारा कितनी टेरीटरी पर कब्जा हुआ, यह मैं सदन में रिकॉर्ड पर बताना चाहूंगा ।'

माननीय अध्यक्ष: अधीर रंजन जी, आप अपनी बात बोलिए । उन्होंने उठा दिया, सदन ने सुन लिया ।

श्री अधीर रंजन चौधरी: सर, उन्होंने यह भी कहा कि हम सबको इस विषय पर ध्यान आकर्षित करना चाहिए ।...(व्यवधान)

उन्होंने कहा कि 'सदन में मैं रिकॉर्ड में यह बताना चाहूंगा कि जसवन्त सिंह, फॉर्मर मिनिस्टर ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स, जो आर्मी में कैप्टेन भी थे, वे जिस जगह पर कैप्टेन थे, वह ऑलमोस्ट चाइना के कब्जे में आ गया । आतु-पुतू दिवांग वैली में एक रिलीजियस प्लेस है । वह भी आ गया ।'

सर, उनका यह दावा है कि 'आज पचास से साठ किलोमीटर से ज्यादा हमारी टेरीटरी पर चाइना ने कब्जा करके रखा है । अपनी सरकार को इस सदन में और मीडिया हाउस को आपके माध्यम से ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं ।'

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य, अगर आपका कोई विषय हो तो बताएं । तापिर गाव जी यहां बैठे हैं । क्या मैं उन्हें बोलने के लिए इजाजत दे दूं?

श्री अधीर रंजन चौधरी: सर, इस पर चर्चा होनी चाहिए । विषय यह है । यहां रक्षा मंत्री जी भी हैं । पाकिस्तान के खिलाफ हमारी आवाज़ में जितना आक्रामक रुख रहता है, चाइना के खिलाफ क्यों हमें नरमी बरतनी पड़ती है? यह हम सबको जानकारी मिलनी चाहिए । हम कोई कमजोर देश नहीं हैं । हमारी फौज कमजोर नहीं हैं, लेकिन आपके रवैये में यह फर्क हमें हताश करता है । आपके रवैये, रुख, तेवर में यह फर्क, यह अन्तर हम सबको पीड़ा देता है ।...(व्यवधान)

सर, क्या हम चाइना से डरते हैं? अगर नहीं डरते हैं तो हमें खुल्लम-खुल्ला बोलना चाहिए । मैं किसी की शिकायत नहीं कर रहा हूं ।

माननीय अध्यक्ष: माननीय रक्षा मंत्री जी जवाब देंगे, अब आप जवाब सुन लीजिए । आपने पूरा बोल लिया । अब माननीय रक्षा मंत्री जी बोलेंगे ।

श्री अधीर रंजन चौधरी: सर, मुझे बस दस सेकेन्ड का समय दीजिए ।

सर, यह मुद्दा हमारे हिन्दुस्तान की आन, बान और शान का है । चाइना हमारे खिलाफ पाकिस्तान को पनाह देता है और चाइना के साथ जो आपका रवैया है, यह रवैया मुझे अच्छा नहीं लगता ।...(व्यवधान)

रक्षा मंत्री (श्री राजनाथ सिंह): अध्यक्ष महोदय, सीमा सुरक्षा को लेकर अधीर रंजन चौधरी जी ने अपनी चिंता व्यक्त की है, लेकिन चुनौती जिसे दी जानी चाहिए, उसे चुनौती नहीं दे रहे हैं, बल्कि सीधे मुझे ही चुनौती दे रहे हैं ।

श्री अधीर रंजन चौधरी : हम आपको आगाह करना चाहते हैं ।

श्री राजनाथ सिंह: अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन को आश्वस्त करना चाहता हूं कि सीमा सुरक्षा को लेकर हमारी सेनाएं पूरी तरह से चौकस हैं और पूरी मुस्तैदी से हमारी सीमाओं की सुरक्षा कर रहे हैं । मैं यह भी आश्वस्त करना चाहता हूं कि हमारी सेनाएं किसी भी प्रकार की चुनौती का सामना करने में भी पूरी तरह से सक्षम हैं । किसी को इस पर सन्देह नहीं होना चाहिए ।

महोदय, इस संबंध में मैं एक डिटेल्ड जानकारी देना चाहता हूं कि भारत और चीन के बीच सीमा को लेकर परसेप्शनल डिफरेंसेज हैं । ये पहले से ही चले आ रहे हैं, बहुत पहले से चले आ रहे हैं । उनका यह कहना है कि हमारी सीमा यहां तक है । भारत का कहना है कि हमारी सीमा यहां नहीं है, बल्कि हमारी सीमा यहां पर है । एल.ए.सी को लेकर एक पर्सेप्सनल डिफरेंसेस हैं, जो दोनों देशों के बीच बहुत पहले से चली आ रही हैं । इसका मूल कारण यह है कि भारत और चीन के मध्य साझा रूप से अंकित कोई वास्तविक नियंत्रण रेखा नहीं है, यानी कोई इस प्रकार की वास्तविक एल.ए.सी. नहीं है । भारत-चीन सीमा के साथ लगे ऐसे क्षेत्र है, जहां दोनों पक्षों एवं एल.ए.सी. की अपनी अलग-अलग अवधारणाएं भी हैं । दोनों पक्षों द्वारा एल.ए.सी. की अपनी-अपनी अवधारणा तक गश्त किए जाने के कारण अतिक्रमण की घटनाएं कभी-कभी हो जाती हैं । इसे मैं स्वीकार करता हूं ।

कभी-कभी पी.एल.ए. कुछ भीतर आती है, लेकिन मैं यह भी बताना चाहता हूं कि कभी-कभी हमारे लोग भी उधर चले जाते है । ऐसा नहीं है । …(व्यवधान)

श्री अधीर रंजन चौधरी : जब … *…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्य की कोई बात अंकित न हो ।

… (व्यवधान) *

माननीय अध्यक्ष: माननीय रक्षा मंत्री जी ।

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय अधीर रंजन जी, प्लीज । इनकी कोई बात अंकित नहीं हुई है ।

…(व्यवधान)

श्री राजनाथ सिंह: अध्यक्ष महोदय, अगर उनकी बात अंकित नहीं हुई है, तो उसका उत्तर देने का कोई औचित्य नहीं है ।…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय रक्षा मंत्री जी, एक मिनट के लिए रूकिए ।

…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: माननीय सदस्यगण, जब कोई चीज रिकॉर्ड में नहीं आएगी और आप यहां बोलेंगे, तो भी प्रेस में जाने वाली नहीं है । आज गंभीर विषय हो गया कि बिना रिकॉर्ड के कोई बात प्रेस में जाती है तो उसके लिए कई सारे विषय उठ गए हैं । मैंने आपको पूरा विषय बोलने के लिए मौका दिया है, इसलिए आप रक्षा मंत्री की पूरी बात सुन लीजिए ।

…(व्यवधान)

श्री राजनाथ सिंह: वैसे तो मैं सीमा की सुरक्षा को लेकर अधीर रंजन जी को ही नहीं, बल्कि पूरे सदन को और सदन के माध्यम से पूरे देश को आश्वस्त कर चुका हूं । मैं पुन: आश्वस्त करना चाहता हूं कि उसको लेकर चिंतित होने की जरुरत

नहीं है । मैंने पहले ही कहा कि लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल को लेकर एक पर्सेप्सनल डिफरेंसेज दोनों देशों के बीच है । कभी-कभी ऐसी स्थिति पैदा होती है कि पी.एल.ए., यानी जो चाइना की आर्मी है और हमारे भारत की जो आर्मी है, इन दोनों के बीच कभी-कभी कान्फ्रन्टेशन की स्थिति हो जाती है ।...(व्यवधान)

श्री असादुद्दीन ओवैसी (हैदराबाद): आप ऑक्साई चीन के बारे में क्या बोलेंगे? ...(व्यवधान)

श्री राजनाथ सिंह: आप रुक जाइए । ...(व्यवधान) जब कभी कान्फ्रन्टेशन के हालात पैदा होते हैं तो बाद में सभी को इस बात की जानकारी होगी कि कितनी सुझबूझ से दोनों तरफ की सेनाएं अपना परिचय देती हैं और कान्फ्रन्टेशन को कभी एस्कलेट नहीं होने देती है । वहां जो संघर्ष होता है, उसको कभी बढ़ने नहीं देती है । कम से कम इतनी सावधानी बरती जा रही है ।

अध्यक्ष महोदय, जब भी इस प्रकार की स्थितियां पैदा होती हैं तो उनसे निपटने के लिए भारत और चीन के बीच कई प्रकार के मैकनिजम्स हैं, जैसे दोनों सेनाओं के स्थानीय कमांडर्स के बीच पसर्नल मीटिंग्स होती हैं, फ्लैग मीटिंग्स होती हैं । जो हॉट लाइन है, उससे incursions, transgressions and face-off जैसी स्थितियों को नियंत्रित किया जाता है । इसके अलावा, कुछ लाँग टर्म जो इश्यूज़ हैं, उनको भी डिप्लोमैटिक लेवल पर रिजॉल्व करने का मैकनिजम हमारे पास है, जैसे स्पेशल रिप्रजेन्टेटिव्स टॉक्स होती हैं, उसमें एस.एस.ए. भाग लेते हैं । कभी-कभी वर्किंग मैकनिजम फॉर कन्सल्टेशन एंड कोऑर्डिनेशन होती है, जिसे हम डब्ल्यू.एम.सी.सी. के नाम से जानते हैं । इस स्तर पर भी बात होती है । कभी-कभी ज्वाइंट सेक्रेटरी लेवल पर भी बातचीत होती है ।

अध्यक्ष जी, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि भारत सरकार देश की सुरक्षा की आवश्यकताओं के बारे में पूरी तरह से जागरूक है । हम लोग समय-समय पर इसकी समीक्षा करते रहते हैं एवं उचित निर्णय भी लेते रहते हैं । भारत-चीन सीमा पर इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे सड़क, टनल, रेलवे लाइन और एयर

फील्ड को डेवलप किया जा रहा है । जिससे देश की एकता, अखंडता और सुरक्षा पूरी तरह से सुनिश्चित हो सके, इसलिए ये सब काम वहां तेजी से हो रहे हैं । इस समय जो भी हालात हैं, मैंने उसकी जानकारी सदन को दी है । मैं पुन: सदन को आश्वस्त करना चाहता हूं कि सीमा सुरक्षा को लेकर किसी को कोई चिंता करने की आवश्यकता नहीं है ।